International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 26-02-2020; Accepted: 02-03-2020; Published: 19-03-2020
Volume 2; Issue 1; 2020; Page No. 10-11

प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री-चिंतन

उपासना
शोधार्थी, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य की विलक्षण बुद्धिजीवी, उपन्यासकार, कवयित्री, नारीवादी चिंतक तथा समाजसेवी प्रभा खेतान का जन्म 1 नवंबर, 1942 को हुआ। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में एमए की डिग्री हासिल की और 'ज्यां पॉल सार्त्र के अस्तित्त्ववाद' पर पीएचडी की उपाधि हासिल की। प्रभा खेतान महज 12 वर्ष की उम्र से ही साहित्य साधना में लग गईं। उनकी पहली कविता 'सुप्रभात' पत्रिका में छपी थी। दर्शन, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, विश्व-बाजार और उद्योग-जगत की वह गहरी जानकार थीं।

उद्योग और साहित्य दोनों क्षेत्रों में उन्होंने अपने को स्थापित किया। कोलकाता चैंबर ऑफ कॉमर्स की वह पहली महिला अध्यक्ष रहीं। स्त्री-विमर्श को केंद्र में लाने के पीछे जिन चुनिंदा लेखकों का योगदान है, उनमें प्रभा खेतान अनन्य हैं। उनकी चर्चित रचनाओं में 'अपरिचित उजाले', 'कृष्णधर्मा मैं', 'छिन्नमस्ता', 'पीली आंधी', दो लघु उपन्यास 'शब्दों का मसीहा सार्त्र', 'बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ' सहित कई चिंतन पुस्तकें शामिल हैं। उनकी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' काफी चर्चित हुई। आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' पहले साहित्यिक पत्रिका 'हंस' में धारावाहिक रूप से छपा था। इस कथा को जहां एक बोल्ड और निर्भीक आत्मस्वीकृति की साहसिक गाथा के रूप में अकुंठ प्रशंसा मिली, वहीं बेशर्म और निर्लज्ज स्त्री द्वारा अपने आपको चौराहे पर नंगा करने की कुत्सित बेशर्मी का नाम भी इसे दिया गया। सिमोन द बोउवा के विश्व प्रसिद्ध उपन्यास 'द सेकेंड सेक्स' का उन्होंने हिंदी में अनुवाद किया था। प्रभा खेतान को उनके साहित्यिक योगदान के लिए महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार व बिहारी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

प्रभा खेतान ने रुढिबध्द मारवाड़ी समाज की स्त्री होने के बावजूद स्त्री अस्मिता, स्वतंत्रता और आर्थिक स्वतंत्रता की चेतना को बेबाकी के साथ अपने उपन्यासों और अपनी आत्मकथा में चित्रित किया है। स्त्री ने आज नए-नए मुकाम अवश्य हासिल किये हैं किन्तु उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्हें पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री जीवन की सच्चाई को बाल्यावस्था से जीवन के विभिन्न पड़ावो में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक रूप में गहराई से देखने और समझने का यह एक माध्यम रहा है। स्त्री जीवन तथा स्त्री -पुरुष संबंधो से जुड़े उन तमाम सवालों को प्रभा जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से उठाया है।

हिंदी साहित्य के महिला लेखन की पूरी परंपरा में प्रभा खेतान के उपन्यासों की महत्ता और उपलब्धि सर्वविदित है। अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, नारीवाद, भूमंडलीकरण से लेकर उत्तर आधुनिकता के विमर्शो में स्त्री विमर्श तक की चर्चा प्रभा खेतान ने अपने विचारो के माध्यम से प्रस्तुत किया है। समकालीन परिदृश्य में सामाजिक परिवर्तनों की चर्चा उपन्यासों के माध्यम से की गई है। उनके उपन्यास स्त्री - पुरुष के संबंधो की गहराई से पड़ताल भी करते हैं। प्रभा जी के उपन्यास वर्तमान समय में स्त्री जीवन की अनेक विडंबनों और सवालो को भी उठाते हैं।

जब भी स्त्री की सामाजिक स्थिति एवं उसकी सामाजिक क्रियाकलापों की साहित्यिक चर्चा होती है तो, प्रभा खेतान के उपन्यासों पर अनायास ही ध्यान चला जाता है। प्रभा खेतान ने जिस बेबाकी से स्त्री के सामाजिक सरोकारों की चर्चा अपने उपन्यासों में की है, वह बेहतरीन है। उनका उपन्यास छिन्नमस्ता भी ऐसा ही एक उपन्यास है, जिसमें उन्होंने स्त्री पात्रों को जीवित कर दिया है। उनके स्त्री-पात्र आधुनिक स्त्री एवं साथ-साथ परम्परागत मूल्यों को दर्शित करते हैं। भारत जैसे विकासशील देश में स्त्री की दशा कभी-भी पूर्ण रूप से सम्मानजनक नहीं रही है, और वो सदियों से संघर्ष ही करती रही है।

स्त्री विमर्श अपने आप में पुरुष द्वारा थोपी गई जाति के लैंगिकरण की अमानवीय व्यवस्था के विरूद्ध स्त्रीत्व का जीवंत संघर्ष है। जिसमें पितृसत्ता तथा पुरुषवाद स्त्री जाति का जन्म से ही बनावटी भिन्न-भिन्न कसौटियों पर स्त्रीलिंगी जैविकता में कैद कर उनकी यौनिकता, प्रजनन क्षमता, उत्पादन क्षमता को मनमाने सत्ता आधारित अर्थो व उद्देश्यों के लिए मालिकाना हक से नीचोड़ लेते हैं। स्त्री-विमर्श स्त्री के जीवन देह, श्रम, सौन्दर्य, छवि को दोहने वाली मादाभक्षी पितृसता के सार्वभौमिक लिंगवादी वर्चस्व विरोधी, स्त्रीजाति का अस्मितामूलक विमर्श और सामाजिक-राजनीतिक उन्नयन के लिए चैरतफा संघर्ष है। प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी और उषा प्रियंवदा के बाद की पीढी की महत्वपूर्ण उपन्यासकार रही हैं।

प्रभा खेतान ने लेखन-विचार तथा व्यवसाय दोनों को सफलतापूर्वक साध कर चौतरफा मोर्चो पर अपने आप को साबित किया है। स्त्रियों द्वारा इस तरह खुद को साबित करना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि पुरुष समाज स्त्रियों को कमतर इन्सान और कम काबिल लैंगिक ईकाई के रूप में जानता पहचानता और मानता है। प्रभा खेतान की व्यवसायिक सफलता सिर्फ विरासत नहीं है। अपनी मेहनत से पाया गया मुकाम भी है। प्रभा खेतान लिखती हैं कि, ''...व्यापार के वे शुरू के दिन थे बिल्कुल ताजा, हर अनुभव के लिए उत्सुक आज जैसा मन उन दिनों नहीं था। आज तो कितनी चीजों को देखकर अनदेखा करती हूँ। चुनौतियों से बचकर निकलती हूँ। उनकी कीमत भी चुकायी है। औरतपने का हीन भाव, पुरुषों की दुनिया में बार-बार अपना औचित्य स्थापित करना चाहता रहा है। क्या मैं औरत हूँ इसलिए यह काम नहीं करूँगी? करके दिखा दूँगी। दिखाया पर देखा भी कम नहीं?'' प्रभा खेतान अपनी अधिकांश रचनाओं में उसी तरह मौजूद रहती हैं, जैसी अपनी कहानियों में लेखक खुद दर्शक भी, सूत्रधार भी और चरित्र भी।

प्रभा खेतान अपनी रचनाओं में जहाँ एक ओर स्त्री जीवन की विविध समस्याओं को उठाती रही हैं, वही दूसरी ओर इन समस्याओं से स्त्री को रोज दो-चार कराने वाली सामाजिक व्यवस्था की सच्चाई से जाँच-पड़ताल भी की है। उन्होंने अपने उपन्यासों में पितृसातात्मक सामाजिक व्यवस्था के बीच स्वतन्त्रता तथा समानता के अधिकार के लिए संघर्षरत विविध चरित्रों को गढा है। ये स्त्री-पात्र जहाँ एक ओर पितृसतात्मक समाज व्यवस्था की सड़ी गली मान्यताओं को मानने से इन्कार कर रही हैं वहीं, दूसरी ओर अपने लिए अलग राह बनाने की ओर अग्रसर हैं। चिंतन सम्बन्धी पुस्तकों में उन्होंने उदारीकरण के बाद बदलते आर्थिक और सामाजिक पदिदृश्य का स्त्री-जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव, पूंजीवादी अर्थतंत्र में स्त्री-श्रमिक के समक्ष उपस्थित चुनौतियों तथा उसके शोषण के विविध रूपों को रेखांकित किया है।

पूंजीवादी बाजार व्यवस्था में यौनकर्मी के रूप में स्त्री स्वयं एक वस्तु बनती जा रही है। इस संबंध में अभय कुमार दूबे लिखते हैं कि- ''भूमण्डलीकरण समाचार माध्यम छुपे हुए

शब्द से लेकर दृश्य श्रव्य माध्यम एक औरत की जो छवि पेश कर रहे हैं उसमें वह एक सुन्दर देह के सिवा कुछ नहीं हैं।'' राष्ट्र अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए इसे एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। प्रभा खेतान लिखती हैं कि- ''फिलहाल स्त्री-श्रम को भूमण्डलीकरण के विधेयक प्रभाव से कहीं अधिक प्रौद्योगिकी का निषेधक प्रभाव झेलना पड़ रहा हैं। अशिक्षित तथा प्रौद्योगिकी ज्ञान से रहित स्त्रियों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए उन्हें इस ज्ञान से लैस करने की आवश्यकता है। ''स्त्री श्रम को अत्यन्त निचले पायदान पर रखा जाता है। वह मात्र सहायिका/ हेल्पर है, मगर मास्टर नहीं।''

अब तक स्त्रियों को वस्त्र, इलेक्ट्रानिक्स, संचार, चमड़े का सामान बनाने वाले उद्योगों में निचले दर्जे का काम मिलता रहा है। ज्यादातर कुशलता वाला और प्रबंधन वाला काम पुरुषों को ही दिया जाता है। समलैंगिक स्त्रियों का दावा यह रहता है कि चूँकि वह पुरुष से प्यार नहीं करती इसलिए वह पितृसतात्मक व्यवस्था को बाहरी व्यक्ति होने के कारण चुनौती देने में ज्यादा सक्षम है। चूँकि इतरलिंगी व्यवस्था को स्वीकारने वाली स्त्री संसर्ग के दौरान पुरुष का आधिपत्य स्वीकरती है इसलिए वह बाह्य जगत में भी पुरुष के आधिपत्य को चुनौती नहीं दे सकती। प्रभा खेतान समलैंगिक स्त्रियों के इस दावे के प्रति शंका जाहिर करते हुए कहती हैं कि, ''क्या लेस्बियन स्त्री सच में पितृसतात्मक संरचना से मुक्त है? क्या, अपने स्वयं के यौन चुनाव में वह उतनी ही स्पष्ट है अपने साथी को उतने ही समान स्तर पर रखती है, जितना की वह दावा करती है। कहीं पर रखती है, जितना की वह दावा करती है। कहीं वह स्वयं भी इतर वैयक्तिक यौन-संबंधों में पितृसतात्मक संरचना को अनजाने ही स्वीकार तो नहीं कर रही।''

प्रभा खेतान ने साहित्य तथा आलोचना में स्त्री साहित्य की क्या स्थिति है। इसे भी अपने चिंतन का विषय बनाया है, ''स्त्रीकरण एक अमानवीय व्यवस्था है, जिसके तहत पुरुष ने अपने विचारों व अवधारणा के अनुसार स्त्री का निर्माण किया है। ऐसे निर्माण में स्वाभाविक है कि स्त्री की सहमति नहीं रही होगी। साहित्य जगत में भी लेखक ने अपनी कल्पना के अनुसार स्त्री स्वरूप का निर्धारण किया है।''

अपने अधिकांश उपन्यासों में स्त्री जीवन की विविध समस्याओं को प्रभा खेतान ने चित्रित किया है। चाहे पूरब हो या पश्चिम, स्त्रियाँ इस पुरुषवादी व्यवस्था के बीच शोषित होने के लिए अभिशप्त रही हैं। अपनी बात को वो 'अपने-अपने चेहरे' उपन्यास में स्पष्ट रूप से कहती हैं कि ''आप नहीं जानती बहन जी! औरत की सारी स्वतन्त्रता उसके पर्स में निहित है।'' औरत को सही रूप में आजाद देखने के लिए उसे आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनना पड़ेगा। स्त्रियाँ आज आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो चुकी हैं फिर भी वह बार-बार पुरुष से छली जा रही है। इस छल के कारण वह कुंठित हो गई है। प्रभा जी कहती हैं कि, ''केवल आर्थिक ढाँचा बदलने से स्त्री को पुरुष के दिमाग में जो स्त्री की पुरुष-हित में छवियों गढ़ता है सम्पूर्ण बदलाव नहीं लाया जा सकता है।''

प्रभा खेतान पूँजीवाद की सबसे घिनौनी देन देह व्यापार को मानती हैं जो उनके 'अग्निसम्भवा' उपन्यास में मुखरता से स्पष्ट होता है ''शरीर बेचना भी धंधा कहलाता है। Zपूँजीवादी समाज की सबसे घिनौनी देन बादशाहों की रखैल से लेकर गली बार में बैठी हुई औरत तक मुझे सबसे नफरत है। आज के युग में कोई मजबूरी का हवाला दे बिल्कुल बकवास है ये औरत क्यों नहीं कहती मुझसे मेहनत नहीं होती।'' प्रभा खेतान ने अपने चिंतन में भी यौन कर्म को सभ्य समाज के लिए कलंक बताया है। लेकिन वे इसके लिए समाज की उस मानसिकता को बदलना चाहती हैं जिसमें वेश्या को तो लांछित और कलंकित किया जाता है जबकि पुरुष ग्राहक को समाज बहिष्कृत नहीं करता।

हीँ उनके उपन्यास 'अपने-अपने चेहरे' में पितृसतात्मक समाज स्त्री के मानस का निर्माण इस प्रकार करता है कि वह पुरुष के अत्याचार को नियति समझकर स्वीकार करती चली जाती है। वह स्त्री के लिए संस्थानिक विवाह को महत्व देती है, चाहे उसे पुरुष प्रताड़ित ही क्यों न करे? पारम्परिक संस्कारों से ग्रस्त सरला के मानस में स्त्री जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता दो चुटकी सिंदूर ही है। ''मन्नो तुम ठीक कह रही हो। अरे कितना भी बिजनेस कर ले, पढ़ाई कर ले, लेकिन एक चुटकी सिन्दुर का आत्मबल ही अलग होता है।''

पितृसतात्मक समाज द्वारा स्त्री को बच्चा बनाने वाली मशीन समझे जाने पर व्यंग्य करते हुए वे कहती हैं कि, ''मुझे क्यों लाए थे आपके भाई बच्चा पैदा करने ही ना? तो जानकर पटक दिया। बच्चे क्या मेरे कहलाए।'' पत्नी पति की सुख-सुविधा के लिए है यह एक ऐसी मानसिकता है जहाँ पुरुष प्रधानता हमेशा गौण स्त्रित्व पर हावी रहती है। 'छिन्नमस्ता' इसका एक पुख्ता उदाहरण है। इसी के समरूप अरस्तु ने स्त्रियों को गुलाम के बराबर ला खड़ा किया और कहा कि ''उनके अस्तित्व की सार्थकता इसी में है कि वे slaves, artisans and traders की तरह highest happiness of the few के लिए प्रस्तुत रहें- राहों में बिछी हुई सी।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि वैदिक काल से प्रारम्भ होकर भूमण्डलीकरण के इस दौर में महिलाएँ अपनी सामाजिक प्रस्थिती (स्टेटस) और सम्मानजनक अस्तित्व के लिए संघर्षशील है किन्तु जैविक- नैसर्गिक भावना के वशीभूत सदैव वंचना की शिकार होती रही है। क्या स्त्री अपनी सर्वाभौमिक पहचान बनाने में समर्थ नहीं होगी? क्या पितृसतात्मक समाज उसे अपने समतुल्य नहीं देख पाएगा? क्या स्त्री अपने अस्तित्व के लिए इसी प्रकार लालायित रहेगी? ऐसे ही कुछ यक्ष प्रश्न हैं जो प्रभा खेतान के सृजनात्मक साहित्यक कृतियों की केन्द्रिकता का निर्धारण करते हैं। लेखिका के साहित्यिक सृजन की अन्तर्वस्तु महज अतीत और वर्तमान की अपेक्षा ही नहीं अपितु भविष्य के पुरुष वर्चस्ववाही समाज से भी यही यक्ष प्रश्न करती रहेगी।

सन्दर्भ सूची

1. कुमार, पंकज(शोधार्थी) . हस्तक्षेप(पत्रिका) . प्रभा खेतान के सृजनात्मक साहित्य में स्त्री जीवन का संघर्ष
2. दूबे, अभयकुमार . हंस . स्त्री भूमंडलीकरण: पितृसत्ता के नए रूप . पृष्ठ 40
3. सिंह, प्रेम . वसुधा (अंक विशेषांक, 59-30). पृष्ठ सं. 191